IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत और चीन

(प. दीनदयाल उपाध्याय, प. जवाहर लाल नेहरु और सरदार पटेल)

AUTHOR

sunilsunil , M.Phil. Research Scholar,
Center for Deendayal Upadhyay Studies,
CUHP,
Sapta Sindhu Parisar Dehra
kangra-177101(H.P.).

सारांश

विश्व की दो प्राचीन सभ्यताओ पर टिके चीन और भारत में १९६२ का युद्ध हो चुका है और आज यह दोनों पड़ोसी राज्य एक दुसरे के साथ सीमा , विदेशी सम्बन्ध , व्यापार , विश्व राजनीती में गुथमगुथा होते रहते है जिससे दक्षिण एशिया के साथ साथ विश्व में तीसरा महायुद्ध छिड़ने की आशंका बनी रहती है । चीन के प्रति स्वतंत्र भारत की प्रारंभिक नीति का मुल्यांकन करना अति आवश्यक है क्यूंकि तिब्बत समस्या से पूर्व भारत और चीन के मध्य हमे इतिहास में कोई बड़ा युद्ध देखने को नही मिलता ।

शब्द बीज

परमाणु शक्ति ,सम्राज्यवाद ,यू एन ओ , विदेशी सम्बन्ध ,राष्ट्रीय सुरक्षा ,दक्षिण एशिया

प्रस्तावना

भारत चीन के बारे में बात करने से पहले हमे थोडा सा उस समय की स्थिति का मूल्यांकन करना अति आवश्यक है। तात्कालिक समय में पूरा विश्व दो शक्ति गुटों में विभाजित था। द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरीका द्वारा परमाणु बम की खोज ने दुनिया पर उसका वर्चस्व स्थापित कर दिया था किंतु 1949 में सोवियत संघ द्वारा भी जब परमाणु परीक्षण कर लिया गया तो विश्व में द्विध्रुवीय व्यवस्था उत्पन्न हुई। ऐसी व्यवस्था उन देशों के लिए चिंताजनक थी जो द्वितीय विश्वयुद्ध पश्चात साम्राज्यवाद के चंगुल से आजाद हुए थे। क्यूंकि उनके सामने अपने देश की अनेक आंतरिक समस्याएं खड़ी थी। ऐसे में इनके लिए प्राथमिकता अपने देश की स्वतंत्रता को स्थिरता प्रदान करना था न कि किसी शक्ति गुट में शामिल होकर दोबारा से उस स्थिति में जाना जहां से वे एक लम्बे संघर्ष के बाद परतंत्र हुए थे। अगर उस समय ये दोनों देश किसी भी एक देश के साथ चल पड़ते तो वे अपनी स्वतन्त्रता को स्थाई नही रख सकते थे। वे इस चीज में उलझ कर रह जाने थे की आज क्या करें या क्या न करें। इसलिए इन राज्यों ने मिलकर गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई , भारत इस आन्दोलन के संस्थापक देशों में से एक था |

भारत और चीन समकालीन समय में परतंत्र हुए देश है एक तरफ भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ, वही चीन 1 अक्तूबर 1949 को स्वतंत्र हुआ। इसलिए दोनों देशो के लिए अपने को एक राष्ट्र के रूप में खड़ा करना एक चनौती थी |क्यूंकि अंग्रेजो ने भारत को उस परिस्थिति में ला छोड़ा था , कि हम चाहकर भी एक न रह सकें। इसीलिए भारत , (भारत और पाकिस्तान) दो देशो के रूप में विभाजित हो गया। लेकिन इस स्थिति को भी समान्य करने और भारत का एकीकरण करने में सरदार पटेल ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जोधपुर, जूनागढ़ और हेदराबाद जैसी रियासतों को भारत में विलय करवाया। उन्होंने साम, दाम, दंड, भेद का प्रयोग करके 560 रियासतों को एकीकृत करके भारत का एकीकरण किया। जम्मू कश्मीर को छोड़कर उन्होंने सभी रियासतों का विलय भारत में करवाया। तो एसी परिस्थिति में दोनों देशो के लिए सबसे आवश्यक था, कि वे अपने को दोनों शक्ति गुटों से दूर रखकर अपने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए विकास की नई राहे तलाश करे । भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने भी वही किया और भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाकर दोनों शक्ति गुटों से दूर रहने का निर्णय किया । जो की उस समय कि परिस्थियों की हिसाब से बहुत ही बड़ा और अहम निर्णय था।

दूसरी तरफ चीन ने तो पहले ही साफ कर दिया था, कि वह पूरी दुनिया में अपने वर्चस्व स्थापित करना चाहता है। लेकिन हम उसकी चाल को समझ नही सके । उसकी विस्तारवादी नीति का आकलन उसके इसी बयान से किया जा सकता है, कि उनके माउ जेडांग ने 1949 के ब्यान में कहा था कि तिब्बत चीन की हथेली है। सिक्किमए नेपालए भूटानए लद्धाख ,अरुणांचल प्रदेश उंगलियां है और चीन अपनी इसी नीति पर कार्य भी करता रहा। भारत और चीन के संबन्धो को समझने के लिया, प. दीनदयाल उपाध्याय, प. नेहरु और सरदार पटेल और तत्कालीन भारत की स्थिति को समझे बिना नही समझा जा सकता है। क्यूंकि इन तीनो ने अपने अपने विचारो से चीन को अच्छे से समझा है। और भारत चीन के सम्बन्धो को समझने के लिए इन तीनो के विचारो को समझना आवश्यक है। प. नेहरु भारत की तत्कालीन स्थिति को

सुधारने में लगे थे और पड़ोसी राज्यों से सहयोगात्मक चरित्र की अपेक्षा रखते थे , तो प. दीनदयाल उपाध्याय और सरदार पटेल चीनी नीति के विरोधी थे इसीलिए वे तत्कालीन प्रधानमन्त्री और विदेश मंत्री (प. जवाहर लाल नेहरु) को समझाते रहे। प. दीनदयाल ने अपनी साप्ताहिक पत्रिका के माध्यम से सरकार को चेताने का काम किया, तो सरदार पटेल ने 7 नवम्बर 1950 को एक विस्तृत पत्र लिखकर चीन के खतरे के बारे में चेतावनी दी थी।

अध्याय 1. :- भूमिका

वर्तमान समय में भारत और चीन विश्व और एशिया के दो बड़े राज्य है जिनकी दोनों की आबादी पूरे विश्व में पहले और दूसरे नंबर पर है और दुनिया में आने वाले समय में दोनों ही बहुत बड़ी शक्तियों के रूप में अभर कर सामने आ रहे है। लेकिन दोनों देशो के विचार एक दूसरे से बिलकुल भिन्न है। एक ओर भारत का विचार वसुदेव कुटुम्बकम की बात करता है और पूरे विश्व को एक परिवार मानता है। वही उसी के अनुसार आचरण भी करता है। जबकि चीन ने स्वतन्त्रता के बाद से अपनी विस्तारवादी नीति का आचरण प्रस्तुत कर दिया था। जब उनके माओ ने 1949 में ब्यान में कहा था कि तिब्बत चीन की हथेली है। सिक्किमए नेपालए भूटानए लद्धाख ,अरुणांचल उसकी उंगलियां है। और उसने उसी के अनुसार अपना आचरण भी किया और पहले तो उसने तिब्बत को तंग करना प्रारम्भ किया फिर धीरे धीरे उसने भारत की तरफ नजरे गडाना शुरू कर दिया। इसी वजह से वह कभी अक्साई चिन में हमे तंग करता है, तो कभी डोकलाम में तंग करता है। वह हमे ही नही अपने अन्य पडोसी देशो को भी इसी तरह से तंग करता है, वह कभी वियतनाम को तंग करता है, कभी कजाकिस्तान तो कभी मंगोलिया को तंग करता है। अब उसने भारत में घुसने के लिए नेपाल का माध्यम चुना है, क्यूंकि वह नेपाल के माध्यम से कभी भी भारत में प्रवेश कर सकता है।

भारत ने चीन के लिए हमेशा दोस्ती का हाथ आगे बढाया लेकिन उन्होंने हमेशा ही पीठ में छुरा घोपने का काम किया। प. 1954 में प.नेहरु ने चीन के साथ 'पंचशील' समझौते और 'गुटनिरपेक्षता' को अंतराष्ट्रीय विचार बनाकर प्रस्तुत । 1962 के चीन के हमले ने 'पंचशील' समझौता और 'गुटनिरपेक्षता' दोनों को कुचल कर रख दिया। प्रधानमन्त्री नेहरु 1947 से लेकर 1964 तक, अपनी सरकार में स्वयं ही विदेश मंत्री रहे और 'गुटनिरपेक्षता' की वकालत करते रहे, लेकिन 1962 में चीन ने सोवियत संघ से सहमति से भारत पर हमला कर दिया। नेहरु व उनकी विदेश नीति पूरी दुनिया में उपहास का पात्र बन गयी। जबकि प. दीनदयाल और सरदार पटेल उन्हें बार - बार चेतावनी देते रहे।

चीन कभी भी विश्वास के लायक नही रहा है, हमारी भूल कहें या नासमझी जो हम उसको सही समय रहते समझ नही पाए, उसने हमेशा हमारी पीठ पर छुरा घोपने का काम किया। क्यूंकि चीन से हमेशा छल व कपट ही देखने को मिलता है। इसी वजह से हमे 1962 में चीन का आक्रमण सहन करना पड़ा हमे हार का मुह देखना पड़ा। क्यूंकि भारत की आर्थिक और सेन्य स्थिति उस समय बहुत कमजोर थी |

अध्याय 2. :- भारत चीन संम्बध

हम अगर इतिहास में झांककर देखे तो हम पायेंगे कि भारत और चीन के बीच किसी भी तरह के विवाद और मित्रता के कोई संबंध नही रहे है, क्यूंकि दोनों के बीच में तिब्बत एक दिवार का काम करता था। इतिहास को खंगालेंगे तो पाएंगे कि हमारी सीमा कंही भी चीन के साथ नही लगती थी। लेकिन वर्तमान समय में देखे तो चीन के साथ हमारे सीमा विवाद सबसे अधिक है | वह कभी डोकलाम पर हमला करता है तो कभी, आसाम के क्षेत्र को अपने मानचित्र पर दर्शाता है।

अध्याय 3. :- चीन के सन्दर्भ में प. दीनदयाल के विचार

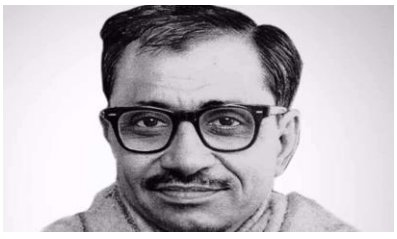

चीन के सन्दर्भ में प. दीनदयाल के विचार बिलकुल स्पष्ट थे। वे किसी भी हालत में चीन के साथ किसी भी तरह के कोई संबंध नही बनाने के लिए नही कहते थे, क्यूंकि चीन की फितरत पीठ पर वार करने की थी। और उसका इतिहास भी यही बताता है की वह कभी भी अपने पड़ोसी देशो के साथ अच्छा व्यवहार नही करता है। उसके अपने पड़ोसियों के साथ भी कलह चालती रहती थी। उसका इतिहास हमेशा ही दूसरो को दबाने का और निचा दिखाने का रहा है। यह इसी बात से स्पष्ट हो

जाता है कि जिस भारत ने उसे सयुंक्त राष्ट्र की स्थाई सदस्यता दिलाने में और उसे एक राज्य के रूप में सबसे पहले दर्जा दिया उसने उसी भारत की पीठ में छुरा घोपने का काम किया।

प. दीनदयाल ने 1950 से 1963 तक लगातार चीन के खतरे को सरकार के सामने रखने का काम किया और भारत सरकार को चीन के खतरे के बारे चेताने का काम करते रहे। प. दीनदयाल ने तत्कालीन परिस्थितयो को ध्यान में रखकर सरकार को 'वी. के. कृष्ण मेनन' के बारे में चेताने का काम किया था। क्यूंकि 'वी. के. कृष्ण मेनन' एक घोषित कॉमुनिस्ट थे, जिसे प. नेहरु ने ब्रिटेन में भारत का राजदूत नियुक्त किया था | वह 1947 से 1952 तक इस पद पर रहे रहे। वह इस तरह के कॉमुनिस्ट थे कि ब्रिटिश प्रधानमन्त्री एटली भारतीय सरकार तक कोई सूचना पहुचाने के लिए लन्दन स्थित भारतीय दूतावास की जगह , दिल्ली स्थित ब्रिटिश दूतावास का इस्तेमाल करते थे। उन्हें शक था कि कॉमुनिस्ट मेनन गोपनीय सूचनाओ को गुप्त तरीके से कॉमुनिस्ट सोवियत संघ तक लीक कर रहे है। बाद में यह खुलासा हुआ कि मेनन सोवियत संघ के लिए गुप्त रूप से काम कर रहे है। इनको हटाने की बात पहले ही प. दीनदयाल ने कर दी थी ,यह कोई विश्वशनीय व्यक्ति नही है। क्यूंकि कृष्ण मेनन ने प्रतिरक्षा मंत्री होने के वाबजूद यह व्यान दिया की, "यद्यपि हमारे सेनाये शसक्त है तथापि चीन का सामना करने के लिए प्रयाप्त नही है" और यह व्यान उन्होंने सबके सामने दिया और फिर उनके बचाव में प. नेहरु ने कहा की हो सकता यह व्यान उन्होंने अपनी सैन्य शक्ति को पूरी करने की दृष्टि से दिया हो।

प. दीनदयाल इस तरह के गुटनिरपेक्षता के बिलकुल भी पक्ष में नही थे, कि गुटनिरपेक्षता के नाम पर अपने आप को अपाहिज बना दिया हो। वो चाहते थे की हम या तो खुले तौर पर किसी भी एक शक्ति गुट में शामिल हो जाये, या फिर वंहा से अलग रहकर अपने को इतना सक्षम बनाये की अगर हमारी तरफ कोई नजर उठाकर भी देखता है , हम उसका काम तमाम कर सके। क्यूंकि हम अगर किसी गुट में शामिल नही होंगे तो विपदा के समय कोई भी हमारी मदद के लिए नही आएगा। और यह हमे प्रत्यक्ष तौर में बाद में देखने को मिलता है, जब चीन हमारे उपर हमला करता है तो उस समय न हम अपने आप इतने सक्षम थे कि चीन के आक्रमण का सामना कर सकें न ही हम किसी शक्ति गुट में शामिल थे और हमने उपर से अपनी रक्षा बजट को भी उस समय कम कर रखा था। चीन के आक्रमण के समय हमे अमेरिका के पास हथियार लेने के लिए जाना पड़ा।

अध्याय 4. :- चीन के सन्दर्भ में प. नेहरु के विचार

प. नेहरु का चीन व अन्य कॉमुनिस्ट देशो के प्रति इतना झुकाव था कि उन्होंने उनके राजनितिक गुरु माने जाने वाले महात्मा गाँधी के ग्रामीण और कुटीर उद्योगों को छोड़कर उन्होंने सोवियत संघ की राह पर चलकर भारी उधोगो को बढ़ावा दिया। क्यूंकि वह हर बात के लिए सोवियत संघ का अनुसरण कर रहे थे। लेकिन गुटनिरपेक्षता की जगह वह अधिक तौर पर साम्यवादी देशो का अनुसरण कर रहे थे। क्न्योकी अगर उस समय प. नेहरु शुद्ध रूप से अगर गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण करते तो चीन के आक्रमण के समय अमेरिका ने हमारा साथ देना था, लेकिन प. नेहरु का अत्यधिक झुकाव साम्यवादी देशो की तरफ था।

अध्याय 5. :- चीन के सन्दर्भ में सरदार वलभ भाई पटेल के विचार

भारत के एकीकरण में सरदार पटेल की प्रमुख भूमिका है, उन्होंने साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाकर भारत को एकीकरण करने में प्रमुख भूमिका निभाई। जम्मू कश्मीर को छोड़कर उन्होंने सभी रियासतों को भारत में मिलाने का काम पूरा किया। उन्होंने जोधपुर, जूनागढ़ और हेदराबाद जैसी रियासतों का विलय भी भारत में करवाया। उन्होंने कुल 560 रियासतों का विलय भारत में करवाया और भारत का एकीकरण करने में अपना योगदान दिया। वे भारत की नब्ज को अच्छे से समझते थे। और भारत के लिए क्या अच्छा है बुरा है सब समझते थे।

सरदार पटेल चीन से भली भांति परिचित थे, इसीलिए उन्होंने चीन के खतरे को देखते हुए 7 नवम्बर 1950 को प. नेहरु को एक पत्र लिखा जिसमे उन्होंने, कहा “तिब्बत हमारे एक मित्र के रूप में था, इसीलिए हमे कभी समस्या नही हुई। हमने तिब्बत के साथ एक स्वतंत्र संधि कर हमेशा उसकी स्वायतता का सम्मान किया है। उत्तर पूर्वी सीमा के अस्पष्ट सीमा वाले राज्य और हमारे देश में चीन के प्रति लगाव रखने वाले लोग कभी भी समस्या का कारण बन सकते है” उन्होंने स्पष्ट रूप से चीन की पेरवी करने वालो को देश के लिए खतरा बताते हुए अपनी बात रखी |

सरदार पटेल चीन की आक्रमणकारी नीति के बारे में बताते हुए लिखते है, “ चीन की दृष्टि हमारी हिमालयी इलाके तक सीमित नही है। वह असम के कुच्छ हिस्सो पर भी नजर गडाए हुए है। बर्मा (म्यामार) पर भी उसकी नज्जर है, बर्मा के साथ और भी समस्याए है। क्यूंकि उसकी सीमा निर्धारित करने वाली कोई भी रेखा नही है, जिसके आधार पर वो समझौता कर सकें। हमारे उत्तर पूर्वी क्षेत्रो में नेपाल, भूटान, सिक्किम, दार्जलिंग, और असम आदिवासी क्षेत्र आते है” अगर हम इन सबकी सुरक्षा नही करेंगे तो वो हम पर कही से भी आक्रमण कर सकता है।

उन्होंने आगे लिखा, कि “चीन की अंतिम चाल, मेरे विचार से कपट और विश्वासघात जैसी ही है तिब्तियो ने हम पर विश्वास किया है। हम उनका मार्गदर्शन भी करते रहे है। और अब हम ही उन्हें चीनी कूटनीति के जाल से बचाने में असमर्थ है। यह दुःख की बात है। ताज़ा प्राप्त सूचनाओ से ऐसा लग रहा है कि हम दलाई लामा को भी नही बचा पाएंगे” । उन्होंने तिब्बती मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करने के लिए बाजपेयी को पत्र लिखा था। उन्होंने लिखा, भतिब्बत में चीनी आगमन हमारे सभी सुरक्षा समीकरण की चिंताओं को बढ़ाता है। मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं कि हमारी सैन्य स्थिति और हमारी सेनाओं पर पुनर्विचार अपरिहार्य

है।" वे चीन के खतरे से भली भांति परिचित हो गये थे। इसीलिए उन्होंने पनेहरु को पत्र लिखकर आगाह . किया था

अध्याय 6. :- वर्तमान समय में प्रासंगिकता

चीन ने अपने सभी पड़ोसी राज्यों को प्रत्यक्ष या अप्रयत्क्ष रूप से पर्याप्त हानि पहुंचाई है | १९५९ में तिब्बत को अपने अधीन करना , १९६२ का भारत –चीन युद्ध , भूटान के साथ चीन का सीमा विवाद , नेपाल के साथ सीमा विवाद इत्यादि | आज पूरा विश्व चीन के आधुनिक युद्ध के रूप में कोविड–19 को भुगत रहा है। क्यूंकि चीन की प्रवृति विस्तारवादी है, वह किसी भी हद तक जा सकता है, जिस देश ने उसे सयुक्त राष्ट्र संघ की स्थाई सदस्यता दिलाने में सहायता की और उसको राज्य के रूप में स्वीकार किया, जब उसने उसकी पीठ पर छुरा घोपने का काम कर सकता है तो दुनिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए चीन क्या नही कर सकता है। अगर भारत उस समय ही उसे रोक देता तो आज विश्व के लिए इतना बडा खतरा न बनता। क्यूंकि उस समय अमेरिका भी इसे आगे नही बढ़ना देना चाहता था। लेकिन अंदर से सभी बड़ी शक्तियों ने चीन को पनपने में मदद की और उसी का अंजाम पूरी दुनिया भुगत रही है।

भारत की भूमिका आज के समय में भी महत्वपूर्ण है क्यूंकि यदि विश्व को चीन की सम्राज्यवादी नीति को रोकना है, और विश्व में शांति स्थापित करनी है तो यह काम केवल एक देश भारत ही कर सकता है, क्यूंकि भारत वसुदेव कुटुम्बकम की बात करता है। पूरा विश्व जब एक परिवार के रूप में रहेगा तो शांति अपने आप ही स्थापित होगी, फिर उसके लिए कोई अलग से योजनाये या संगठन निर्माण करने की आवश्यकता नही पड़ेगी। विश्व का कल्याण भारत के कल्याण में ही संभव है।

सन्दर्भ सूचि :-

1. पोलिटिकल डायरी, "प. दीनदयाल उपाध्याय"
2. दीनदयाल उपाध्याय संम्पूर्ण वांग्मय, "डॉ महेश चंद शर्मा"
3. भारत की विदेश नीति पुनरवलोकन एवं संभावनाए, "सुमित गौन्गली"
4. भारत की खोज, "प. जवाहर लाल नेहरु"
5. कहानी कम्यूनिस्टो की, "संदीप देव"
6. चीन के खतरे को लेकर 7 नवम्बर 1950 को सरदार पटेल द्वारा प. नेहरु को लिखा गया पत्र

Websites

https://hi.wikipedia.org/wiki/हिन्द_महासागर#/media/चित्र:Map_of_the_Indian_Ocean_and_the_China_Sea_was_engraved_in_1728_by_Ibrahim_Müteferrika.jpg
https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Navy#Naval_exercises
https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRhttps://www.imo.org